एक उत्तम प्रश्न। इस प्रश्न के उत्तर विभिन्न है। कुछ लोगों का कहना है कि “कोई परमेश्वर नहीं है”। इस प्रश्न का उत्तर, दूसरों के प्रति आपका व्यवहार और अनन्त जीवन आप कहाँ बितायेंगे दर्शाता है। हमारा विश्वास कि खुदा/ परमेश्वर कौन है? इस बात को व्यक्त करता है कि हम परमेश्वर की आराधना करते हैं या फिर स्वयं की? यदि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं तो मनुष्यों से प्रेम रखना स्वभाविक है। इस संसार में 3 प्रमुख धर्मों को माना जाता है। तीनों धर्म एक दूसरे से भिन्न है, इसलिए तीनों सत्य नहीं हो सकते । मैं आपको बताता हूँ:

इसाई धर्म के अनुसार “परमेश्वर मनुष्यों के लिए मरा”।
इस्लाम धर्म के अनुसार “मनुष्य को परमेश्वर के लिए मरना चाहिए”।
हिन्दू धर्म के अनुसार “परमेश्वर वो है जिसकी छवि तुम्हारे मस्तिष्क में है”।
इसाई धर्म के अनुसार “परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की”।

इस्लाम = स्वयं की आराधना
हिन्दू = स्वयं की आराधना
इसाई = परमेश्वर की दया

आप स्वयं की आराधना का प्रयास कर रहे हो, जो परमेश्वर तुम्हारे लिए पहले ही कर चुका है।

परमेश्वेर का अनुग्रह आपके लिए वो सब कर सकता है जो आप अपने लिए नहीं कर सकते।

स्वयं के द्वारा नहीं बल्कि दया के द्वारा आप विश्वास से बचाए जाते हो। (इफसियो 2:8) हम सब गलतियाँ करते हैं। मैंने सबसे बड़ी गलती कि मैंने यीशु मसीह को ग्रहण नहीं किया। यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता स्वीकार करना, मेरा सर्वोत्तम निर्णय है। यीशु ने पतरस से पूछा “तू क्या कहता है, कि मैं कौन हूँ?” “यीशु मसीह कौन है, तुम क्या कहते हो?” मैथ्यू 16:16 पढ़े। अपने जीवन के सबसे अहम प्रश्न का उत्तर आपके अतीत, वर्तमान और भविष्य के जीवन का निर्णायक है। आप क्या कहते हैं कि वो कौन है?

भारत, यीशु आपसे प्रेम करता है।